सामीप्य सिद्धांत या सरोकार. **PANI BABA**

समाचार पत्र प्रकाशन की दृष्टि से, सामीप्य सिद्धांत के आधार पर ही किसी समाचार को प्रमुख या गौण माना जाता है। अंग्रेजी में इसे 'थ्योरी ऑफ प्रोक्सिमिटी' कहते है। प्रोक्सिमिटी का शाब्दिक अर्थ है नजदीकी या सामीप्य। परंतु समाचारों के विशेष्ज्ञ संदर्भ में इससे सरोकार का अर्थ लिया जाता है। सरोकार का तात्पर्य है कि कोई समाचार विशेण, पाठक को कितना प्रभावित करता है या उसके लिये कितना महत्वपूर्ण है। इसी सिद्धांत को ध्यान में रखकर समाचार पत्रों में समाचारों का प्राथमिकता क्रम तय किया जाता है। हम यह भी कह सकते है कि सामीप्य सिद्धांत ही वह कसौटी या पैमाना है जिसके आधार पर समाचार के महत्व का आंकलन किया जाता है। वह समाचार का नियंत्रक कारक है। जो समाचार कार्य के अन्य सभी तत्वों को समायोजित एवं नियंत्रित करता है।

एक समाचार पत्र में अंराष्ट्रीय, राष्ट्रीय, स्थानीय आदि सभी प्रकार के समाचार होते हैं। समाचार पत्र कार्यालय में विभिन्न स्रोतों जैसे एजेन्सियों और संवाददाताओं से खबरें आती है। शाम होते–होते डेस्क पर समाचारों का ढेर लग जाता है। समाचारों के उस ढेर में से छापने योग्य समाचारों का चुनना, उन्हें पूर्ण परिपूर्ण समाचार का रूप देना, अखबार में उपयुक्त स्थान देना, उप–संपादक का मुख्य कार्य होता है। इस क्रम में, समाचारों को चुनने का कार्य सामीप्य (सरोकार) के सिद्धांत के आधार पर ही किया जाता है। पाठक का किसी समाचार से जुड़ाव ही समाचार के महत्व का निर्धारित करता है और यह जुड़ाव ही पाठक एवं समाचार के सामीप्य को दर्शाता है। इस प्रकार से समाचार की एक परिभाषा सामीप्य भी है और पाठक वर्ग सामीप्य का केन्द्र बिन्दू है।

सामीप्य के विविध आयाम हो सकते है। यानी पाठक का किसी समाचार (घटना) से जुड़ाव अनेक कारणों से हो सकता है। प्रमुख आयाम है :

1. भौगोलिक सामीप्य
2. विशिष्टता से निकटता की प्रवृति
3. भावनात्मक सामीप्य
4. सामयिक सामीप्य

भौगोलि सामीप्य

भौगोलिक से तात्पर्य स्थान की निकटता से है।

भौगोलिक सामीप्य का अर्थ है कि घटना विशेष भौगोलिक दृष्टि से पाठक के कितनी नजदीक है या उसे कितना प्रभावित करती है। पाठक और घटना में जितनी निकटता होगी उस पाठक के लिए वह समाचार भी उतना ही महत्वपूर्ण होगा। जैसे जयपुर के पाठको के लिए टोंक में किसी दुर्घटना में पांच जनों के मरने की खबर दिल्ली में पांच व्यक्तियों के रने की खबर से ज्यादा महत्वपूर्ण है। क्योंकि टोंक भौगोलिक दृष्टि से जयपुर से समीप है और जयपुर से प्रकाशित होने वाले किसी भी समाचार पत्र में

इसको अधिक प्राथमिकता मिलेगी। अग्नि समाचारों में यह बात अती तीव्रता से लागू होती है। भौगोलिक सामीप्य का सिद्धांत परिवार, घर–पड़ोस से शुरू होकर नगर, प्रदेश, देश, पृथ्वी और पड़ोसी ग्रह आदि तक लागू रहता है।

विशिष्टता से निकटता की प्रवृति

विशिष्टता की चाह मानव का स्वभाव है। लेकिन हर किसी के लिए विशिष्ट हो जाना संभव नहीं होता। मनोविज्ञान का सिद्धांत है कि समाज में जो भी विशिष्ट होते है अथवा जिस भी प्रकार का वैशिष्ट्य प्रचलन में होता है, उनसे निकटता स्थापित करने से हमें एक तरह की विशिष्टता का अहसास होता है। इससे, खुद विशिष्ट न होने की जो कमी होती है उसकी एक सीमा तक तुष्टि होती है। उदाहरण के लिए किसी बड़े राजनीतिज्ञ से अपनी जान–पहचान जतलका कर एक आम आदमी अपने आप को कुछ अलग दिखाना चाहता है। यही स्वभाव व्यक्तियों की प्रवृति बन जाता है। ऐसा लगता है कि इसके मूल में वह मान्यता है जिसके अनुसार पुण्यात्मा को छू लेने भर से पुण्य–प्राप्ति हो जाती है।

किसी की क्षेत्र विशेंण में आगे निकलने की चाहत है किंतु वह उपलब्धि उसे हासिल नहीं होती तो उसका अर्द्ध चेतन मन उसे उस क्षेत्र के विशिष्ट लोगों से, मित्रता जताने के लिए प्रेरित करता है। उसी वैशिष्ट्य की लालसा से संभ्रांत लोगों से जुड़ी चर्चाओं में रोचकता आ जाती है। इसलिए हर तरह की विशिष्टता, अपने आप में समाचार है। विशिष्टता एक सार्वभौमिक अवधारणा है। विशिष्टता कहीं भी हो उससे आम आदमी का जुड़ाव एक स्थायी भाव है। इसीलिए अमरीकी राष्ट्राध्यक्ष की मृत्यु पूरी दुनियां में समाचार बनती है। हालांकि लगभग पूरे विश्व में लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं है फिर भी राज–प्रासादों से जुड़ी घटनाएं समाचारों में मुख्य स्थान पाती है। इसी तरह कवि, संगीतज्ञ, कलाकारों, फिल्मी सितारों की विशिष्टता से निकटता भी 'लोक–धर्म' बनता जा रहा है।

विशिष्टता सार्वभौमिक होती है – दुनिया के किसी भी कोने में।

विशिष्ट कलाकार का उदय हो या विशिष्ट नेता – विशिष्टता का उदय समाचार का विषय वस्तु है। विशिष्ट व्यक्ति हो वस्तु, उसका जन्म हो या मृत्यु – विशिष्टता के हर पहलू से हरेक किसी का सरोकार है।

सामयिक समीपता का अर्थ है समयानुसार घटना के महत्व को आंकना। समाचार अल्पजीवी एवं परिवर्तनशील होता है। अस्तित्व में आने के साथ ही समाचार और उसके महत्व में परिवर्तन आने शुरू हो जाते है। ऐसे में समाचार जितनी शीघ्रता से जनता तक पहुंचाया जाता है उसमें उतना ही नयापन रहता है और पाठक के लिए उसमें उतनी ही नवीनता होती है। इतिहास की वह सभी घटनाएं जो पाठक के चेतन या अचेतन को उद्वेलित करती है, पाठक के साथ समरसता–सामीप्य स्थापित करने में सहायक होती है। इतिहास से जोड़ कर उसका महत्व बढ़ाया जा सकता है।

इस संदर्भ में हम यह भी कह सकते है कि पठनीयता का सिद्धांत भी सामीप्य ही है। कोई भी संवाद जिससे पाठक निजी सरोकार महसूस कर सके पठनीय बन जाता है।

भावनात्मक सामीप्य

विदेशों में रह रहे भारतीयों के लिए भारत का समाचार महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार भारतीयों के लिए प्रवासी भारतीयों से संबंधित समाचार महत्वपूर्ण होते हैं। व्यक्ति जहां भी, जिससे भी भावनात्मक रूप से जुड़ा होता है, उस संबंध में जुड़ा समाचार महत्वपूर्ण हो जाता है। भावनात्मक सामीप्य से समाचारों का महत्व निर्धारित होता है।

लोक सभा या विधान सभा के चुनावों की तिथि या चुनाव होने की घटना की सभी समाचार पत्रों में लीड़ बनती है। ऐसा आपस में तय करके नहीं किया जाता है। कोई भी समाचार स्वतः ही सामीप्य के सिद्धांत को निम्नांकित उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है।

जोधपुर से 100 किलोमीटर दूर स्थित मरुस्थल के एक गांव की एक आदिवासी वृद्धा जिसकी मान्यता के अनुसार "रोटी की सुरक्षा – राठोड़ी राज में आज से बेहतर थी" ने ऐ प्रश्न के उत्तर में कहा था कि उसे "राठोड़ी" राज की रोटी नहीं बल्कि वोट के राज की इज्जत चाहिए। इस उत्तर से स्पष्ट होता है कि दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली 'अनपढ़' बुढ़िया भी भारत के एकीकृत संघीय लोकतांत्रिक राज व्यवस्था में अपना निहित स्वार्थ देखती है। वह इस बात को समझती है कि वोट का अधिकार उसे इसी स्वतंत्र एकीकृत भारत के निर्माण के बाद ही मिला। इस तथ्य से भीलनी का पूरे राष्ट्र और इसकी प्रजातंत्रीय व्यवस्था से जुड़ाव और पारस्परिकता अभिव्यक्त होती है। जोधपुर के सोलंकिया तला गांव की 88 वर्षीय भीलन सायर बाई के लए यदि 'वोट राज' का महत्व इतना गंभीर है तो देश के किसी भी हिस्से में किसी भी तरह के चुनाव संवाद की वरियता को सहज ही आंका जा सकता है।

भारत राष्ट्र है तो प्रजातंत्र है, प्रजातंत्र है तो वोट राज की इज्जत है जिसका महत्व रोटी या जीवन की सुरक्षा से किसी कदर कम नहीं। वो इसलिए 'वोट और वोट राज' का समाचार आम नागरिक के लिए एक महत्वपूर्ण घटना है और 'सामीप्य सिद्धांत' के आधार पर महत्वपूर्ण समाचार बन जाता है।

कोई संवाद जिससे पाठक सरोकार महसूस करता हो या किन्हीं कारणो/परिणामों से प्रभावित होता हो वह समाचार पठनीय भी है और वरियता में महत्वपूर्ण भी है।

सरोकार का सिद्धांत समाचार पत्र, वार्ता तक ही सीमित नहीं, साहित्यिक विद्याओं– कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास या अन्य ललित लेखन में भी उच्च कोटि की पठनीय सामग्री वही है जो पाठक में सरोकार की भावना जागृत कर सके।

पाठक के सरोकार को जानना, समझना प्रज्जवलित और तुष्ट करना पत्रकारिता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कौशल है, घटना टूरिकोरिन की हो या टिम्बकर की, वार्ता विशुद्ध विज्ञान की हो या साहित्य सृजन की – समाचार की वरियता पाठक के सरोकार से ही निर्धारित होती है जिस संवाद की प्रस्तुति में पाठक का परोक्ष–अपरोक्ष सरोकार नहीं वह संवाद समाचार नहीं। साधारण से साधारण घटना को 'पाठक–सरोकार' का संबंध देकर महत्वपूर्ण एवं उच्च वरियता का बनाया जा सकता है, और सर्वाधिक महत्व के समाचार की प्रस्तुति में 'पाठक सरोकार' के अभाव से अपठनीय और अनर्गल बनाया जा सकता है।

आदर्श समाचार पत्र की पहचान उसमें लक्षित 'पाठक सरोकार' से की जा सकती है। आदर्श समाचार पत्र वही होता है जो अधिकतम वार्ताओं की प्रस्तुति में अधिकतम पाठक वर्ग के सरोकार को दृष्टि ओझल नहीं होने देता। अच्छे पत्रकार की पहचान भी यही है कि वह अपने लक्षित पाठकवर्ग को जानता है और उसके सरोकार को समाचार लेखन में उभार सकता है। इस सरोकार को जानना, समझना, अभिव्यक्ति देना ही 'समाचार बोध' कहलाता है। सरोकार की भाषा ही अच्छी पत्रकारिता है।

गरीबी, भूखमरी के संदर्भ में किये जा रहे एक सर्वेक्षण में थार मरुस्थल के सूदूर अंचल की निर्वासिन आदिवासी वृद्ध महिला से जब यह पूछा गया कि 'राठोड़ी राज' के वक्त रोटी सुविधा से मिलती थी या आधुनिक प्रजातंत्र के युग में। भीलनी का स्पष्ट उत्तर था कि 'राठोड़ी राज' में रोटी 'घणी चोरवी' मिलती और 'बिना कूके' (रोये) मिलती थी। किंतु उसी वृद्धा से जब यह पूछा गया कि क्या वह 'राठोड़ी राज' की वापसी चाहती है तो उसका स्पष्ट उत्तर था कि "राठोडी राज री रोटी नी चाइजै, वोट र राज री इज्जत चाइजै।"